ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

माध्यमिक स्तर पर छात्राओं की शैक्षिक और समायोजनात्मक समस्या के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

(बाँदा जनपद के विशिश्ट सन्दर्भ में)

रत्नेश कुमार मिश्रा

असि0 प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग, सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी (बाँदा), बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से सम्बद्ध, उ0प्र0

बालक जब जन्म लेता है तो वह न तो सामाजिक और न ही असामाजिक होता है, बल्कि समाज के प्रति उदासीन होता है। उम्र बढने के साथ–साथ सामाजिक गुणों से परिपूर्ण होता चला जाता है। इस प्रक्रिया में सर्वाधिक विकास उसकी किशोरावस्था के दौरान पाते ह। यह संक्रमण की अवस्था है। जिसमें बालक न बालक रहता है और न प्रौढ़। किशोरावस्था परिवर्तन का समय है, मानसिक हो या शारीरिक।

आसुबेल ने कहा है, ''हमारी संस्कृति में किशोरावस्था को व्यक्ति जैव सामाजिक स्थिति पर एक संक्रमण काल कहा जाता है। इस अवस्था में कर्तव्यों, जिम्मेदारियों, विशे" ाधिकारों और अन्य लोगों के साथ सम्बन्धों में बहुत परिवर्तन हो जाते है। ऐसी हालातों में अपने माता–पिता, साथियों और दूसरों के प्रति अभिवृत्तियों का बदल जाना अनिवार्य हो जाता है।'

बालक जैसे ही परिपक्वता ही ओर बढता ह वैसे ही उसके शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और प्रवृत्यात्मक व्यवहार के अनुरूप उसकी सामाजिक कियाओं तथा व्यक्तित्व का विकास होता है। सामाजिक कियोओं के कारण उसमें सामाजिक भावना का विकास होता है। वह पहले से अधिक मानव प्रिय और सामाजिक बनता जाता है। वास्तव में इसी प्रक्रिया को सामाजिक विकास कहते है।

स्वतंत्रोत्तर काल में शिक्षा में तमाम प्रचार और प्रसार हुआ, इसे नही नकारा जा सकता है तथापि जो वांछित परिणाम अपेक्षित थे, वह नही आ सके। आज भी अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा जिसके लक्ष्य को संविधान लागू होने 10 वर्षा में ही पाने का संकल्प था, पूर्ण नही हो सका है। माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी अपेक्षित प्रतिशत में प्रवेश नही होते हैं और न ही प्रवेश हेतु पर्याप्त संसाधन ही उपलब्ध है। जहां तक बालिकाओं की शिक्षा का प्रश्न है, उनकी स्थिति और भी निराशाजनक तथा चिन्ताजनक है। अतएव बालिकाओं की शिक्षा से जुड़ी समस्याओं का समाधान तथा अपेक्षित संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है।

भारतीय संविधान ने नारी को समान अधिकार प्रदान किये है। उसे मतदान करने का अधिकार है तथा पिता की सम्पत्ति में हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार है। कहना अतिशयाक्ति न होगा कि जहॉ भी नारी को अवसर मिला है उसने पुरूषों के समाान ही सफलता के प्रतिमा स्थापित किये है। तथा समाज को यह सोचने के लिए विवश किया है कि उसे कमतर आँका जाना न तर्क संगत है और न न्यायपूर्ण। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर विद्यालयों की अनुपलब्धता तथा अन्य सामाजिक परिस्थितयों के कारण प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति संतो" ाजनक नही है। ग्रामीण परिवेश की सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियॉ, बालिकाओं के प्रति रूढिवादी सोंच, लड़का– लड़की में भेद जैसी सामाजिक विसंगतियॉ आज भी हमारे समाज में किसी न किसी रूप में विद्यमान है, जो प्रकारान्तर से बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

अतः माध्यमिक स्तर की छात्राओं की सामाजिक ,शैक्षिक स्तर तथा समायोजनत्मक समस्याओं का अध्ययन आवश्यक एवं समीचीन होगा ताकि अन्ततोगत्वा सामाजिक, ‘ ाक्षिक स्तर एवं समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सके और अध्ययन में आपेक्षित परिस्थितियों के निर्माण के प्रयास किये जाये ताकि समाज नारी की क्षमताओं एवं विशि” टताओं से पूर्णरूपेण लाभावित्न्त हो सके और एक सुखी व समृद्व समाज की कल्पना को साकार किया जा सके जो कि शिक्षा का मूल मंतव्य है।

वर्तमान में लघ् शोध की आवश्यकता एवं महत्व

माध्यामिक स्तर की छात्राओं को इनके अनुरूप शिक्षा देकर उनकी शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर किया जाये जिससे वे सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक व राजनैतिक दृष्टि से सबल हो और श्रोत में अपना उच्चतर स्थान बनाने मे सफल हो सके। इसके लिए आवश्यक है कि उनकी शिक्षा बिना किसी भेदभाव को सुचारू रूप से चलायी जाये।

माध्यमिक स्तर की छात्राओं को ध्यान में रखकर ऐसे शोध की आवश्यकता है,जिससे यह पता चले कि वर्तमान में रूढिवादिता, प्राचीन विश्वासों तथा स्त्रियों के प्रति भेद–भाव की नीति होते हुए भी उनकी शिक्षा की क्या स्थिति है। उनकी प्रगति किस प्रकार की है तथा उनके सम्मुख समस्याऐं एवं बाधायें क्या है?

1964 में इलाहाबाद के कक्कड ने माध्यमिक स्तर की छात्राओं की समायोजन की समस्याओं पर अध्ययन किया।1970 में आगरा विश्वविद्यालय के आर0एन0 अग्रवाल ने समायोजन की समस्या पर अध्ययन किया।1972 में कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के भुट्टो ने शहरी एवं ग्रामीण स्तर की छात्राओं पर उनके बुद्धि स्तर तथा सामाजिक, आर्थिक एवं ‘ ाक्षिक स्तर के सम्बन्ध मे समायोजन अन्तर का अध्ययन किया।इस प्रकार उपर्युक्त क्षेत्र में माध्यमिक स्तर की छात्राओं की समस्याओं पर गहन अध्ययन किया जा चुका है किन्तु ऐसे अध्ययनों की बाँदा जनपद (चित्रकूट धाम मण्डल) में अनुपलब्धता है।

अतः आवश्यक है कि इस क्षेत्र म ऐसे अध्ययन किये जायें तथा उनसे प्राप्त परिणामों के आधार पर योजनाएँ बनाकर प्रशासनिक, सामाजिक स्तर से प्रयास किये जायें, जिससे माध्यमिक स्तर की छात्राओं की समस्या का समाधान हो सके।

अतः उपर्युक्त को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत समस्या के संन्दर्भ में लघु शोध करने का निर्णय लिया एवं लघुशोध कार्य के लिए चित्रकूट धाम मण्डल के बांदा जनपद का चयन किया तथा जनपद के विभिन्न बालिका विद्यालयों के सर्वेक्षण से प्राप्त ‘ ाक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं की जानकारी की जाये ताकि पता चल सके कि आज की माध्यमिक स्तर की छात्राओं को समस्याओं के कौन–कौन से आयाम है। इन आयामों का उनके समाधान के लिए अभिभावक, शिक्षक और समाज के क्या कर्तव्य है।

लघु शोध के उद्देश्य :–

1. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. छात्राओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
3. छात्राओं की समायोजनात्मक स्थिति का अध्ययन करना।
4. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक स्थिति के मध्य सह सम्बन्ध का अध्ययन करना।
5. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि व उनकी समायोजनात्मक के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

लघु शोध की परिकल्पनाएँ :– लघु शोध के उद्देश्य के परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जायेगा–

1. माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नही है।
2. माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी छात्राओं की सामाजिक स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. किशोर बालिकाओं (माध्यमिक स्तर पर) की शैक्षिक उपलब्धि व उनके उम्र के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध है।
4. माध्यमिक स्तर पर छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि व पाठ्क्रम के बीच धनात्मक सह सम्बन्ध है।

निश्कर्श :–

शैक्षिक अनुसंधानकर्ता ने अपने प्रदत्तों के आधार पर निश्कर्शो का निरूपण तथा सामान्य नियमों का निर्धारण करते समय पूर्ण सावधानी एवं सतर्कता रखने की आवश्यकता होती है। परिणामों की व्याख्या के समान ही निश्कर्श एवं सामान्य नियमों के निरूपण के समय भी सूक्ष्म निरूपण, विस्तृत दृश्टिकोण तथा तर्कसंगत चिन्तनशीलता की आवश्यकता होती है। किसी भी अनुसंधान कार्य का निश्कर्श निर्धारित तथ्यों एवं प्रकृति के नियमों के अनुकूल होना चाहियें।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही अनुसंधानकर्ता द्वारा प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेशण एवं व्याख्या के आधार पर ही उचित निश्कर्श प्रस्तुत किया गया है।

प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेशण एवं व्याख्या के आधार पर निम्न निश्कर्श प्राप्त हुए है–

1. माध्यमिक स्तर पर छात्राओं के समायोजन (संवेगात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक) स्तर का उनकी शैक्षिक निश्पत्ति पर प्रभाव पड़ता है।

   अध्ययन से यह पाया गया कि उच्च समायोजन (संवेगात्मक,सामाजिक तथा शैक्षिक) स्तर वाली छात्राओं की शैक्षिक निश्पति उच्च मध्य निम्न मध्य निम्नतम समायोजन स्तर वाली छात्राओं की शैक्षिक निपत्ति से अद्वितीय अधिक होती है।

2. माता–पिता की उच्च शिक्षा का छात्राओं के शैक्षिक नि" पत्ति पर भी प्रभाव पड़ता है।
3. माता–पिता के समायोजनात्मकता का छात्राओं की शैक्षिक नि" पत्ति पर भी प्रभाव पड़ता है।
4. अभिभावक के समायोजन (संवेगात्मक, सामाजिक,तथा शैक्षिक) स्तर का छात्राओं की शैक्षिक निश्पत्ति प्रभावित करती है।
5. उच्च समायोजन स्तर वाले माता–पिता के बच्चों की शैक्षिक नि" पत्ति औसत तथा निम्न समायोजन स्तर वाले माता–पिता के बच्चों की शैक्षिक निश्पत्ति की अपेक्षा अधिक अच्छी होती है।
6. उच्च सामाजिक तथा शैक्षिक स्तर वाले परिवार की छात्राओं की शैक्षिक नि" पत्ति, सामान्य तथा निम्न सामाजिक तथा शैक्षिक स्तर वाले परिवार की छात्राओं की सांस्कृतिक स्तर (समायोजन स्तर) छात्राओं की शैक्षिक निश्पत्ति को प्रभावित करता है।
7. परिवार की सामाजिक सहभागिता (शहरी तथा ग्रामीण) का बच्चों की शैक्षिक नि" पत्ति पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

i. अग्रवाल राम नरायण मनोविज्ञान व शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन वि0प्र0म0 आगरा वर्ष 1993

ii. गैरेट, एच0ई0 शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी का प्रयोग कल्याणी प्रकाशन, राजेन्द्र लुधियाना वर्ष 1995

iii. गैरा, सुखलाल विज्ञान शिक्षण के आधार न्यू पब्लिक हाउस, कानपुर 2002

iv. गुप्त, रामबाबू शिक्षण कला, न्यू पब्लिक हाउस कानपुर 2004

v. चौरसिया, एम0लाल कक्षा शिक्षण में सहायक सामग्री वि0म0प्र0 आगरा वर्ष 2002

vi. सुखिया, एम0पी0 मेहरात्रा शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व पी0वी0 एवं मेहरात्रा आर0एन0वि0प्र0म0 आगरा, 2005

vii. डॉ0 कपिल, एच0के0 सांख्यिकी के मूल तत्व

viii. शुक्ला, एन0एन0 ज्नरल ऑफ वोकेशनल एण्ड एजूकेशनल गाइडेन्स वोल्यूम 5

ix. वैल्थमैन, एल0 नेशनल सोसाइटी फॉर द स्टेडी ऑफ एजुकेशन प्रथम भाग, पृ''ठ संख्या 25,26

x. एनैस्टेसी एनै0 (1961) मनाविज्ञान परीक्षक '' न्यूयार्क मैककमिलन एण्ड कम्पनी लन्दन''

xi. कैप्टिन रैयर्स एण्ड एच गर्ग '' एजुकेशनल मेजरमेण्ट एण्ड एवोल्यूशन अध्याय7 पृ0सं0 108

xii. लोक्विंगर, जे0 '' हायर बुक ऑफ द नेशनल सोसायटी फॉर द स्टडी ऑफ एजुकेशन'' अध्याय 39 पृ0सं0 33

xiii. डॉ कपिल, एच0के0 संख्यिकी के मूल तत्व

xiv. शुक्ला एन0एन01985 जरनल ऑफ वोकेशनल एण्ड एजुकेशनल गाइडेन्स'' वोल्यूम 5

xv. शर्मा, दिवाकर मानव बुन्देलखण्ड का सामाजिक,आर्थिक जीवन वर्ष–6 अंक 2 अप्रैल जून 1978 पवन ग्राफिक्स एण्ड फोड़ कल्चर सोसायटी लखनऊ

xvi. बनर्जी, अंजलि ''कक्षा आठ के छात्रों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का शैक्षिक निश्पत्ति पर प्रभाव'' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग द्वारा प्रस्तुतशोध ग्रन्थ सन् 1962

www.ijahms.com